बी.ए. भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
पेपर- 8
"रामचरितमानस"

रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग डी.के. कालेज
डुमरॉव बक्सर बिहार

रामचरितमानस -

वर्णानामर्थ संघानां रसानां छन्दसामपि ।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ ।।

नानापुराणनिगमागम सम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ
गाथा भाषा निबन्धमतिमञ्जुलमातनोति

बंदउगुरु पद पदुम परागा ।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ।।

सीय राममय सब जग जानी ।
करऊँ प्रणाम जोरि जुग पानी ।।

निज कवित्त केहि लाग न नीका ।
सरस होउ अथवा अति फीका ।।

कबित बिबेक एक नहिं मोरें ।
सत्य कहऊँ लिखी कागद कोरे ।।

गिरा अरथ जल बीचि सम
कहियत भिन्न न भिन्न ।

मैं पुनि निज गुर सन
सुनी कथा सो सूकर खेत ॥

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई ॥

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा।
अकथ अगाध अनादि अनूपा॥

पुरइनि सघन चारु चौपाई।
जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई॥
छंद सोरठा सुन्दर दोहा।
सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा॥

कामिहि नारि पियारी जिमि
लोभहि प्रिय जिमि दाम॥

कत बिधि सृजि नारी जग माही।
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं॥

भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा।
उभय हरहि भव संभव खेदा॥

ढोल गँवार शूद्र पसु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी॥

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेदपथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुख नहि भय सोक न रोग॥

बिधिहु न नारि हृदय गति जानी।

मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू,
तुमहि उचित तप मो कहुं भोगू॥

श्रुति सम्मत हरि भगत पथ संजुत बिरति बिबेक

जे न मित्र दुख होतिं दुखारी।
तिनहिं बिलोकत पातक भारी॥

सब नर करहि परस्पर प्रीति।
चलहिं स्वधर्म निरतिश्रुति रीति॥

ईश्वर अंस जीव अविनासी। चेतन, अमल, सहज सुखरासी

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी विभाग डी. के. कालेज
डुमराँव बक्सर बिहार